

रॉयल्टी ४

१

सदा चेक करो - जितना समय और जितनी पावर से अपने कर्मेन्द्रियों, मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर अभी अधिकारी बनते हो उतना ही भविष्य में राज्य अधिकार मिलता है। अगर अभी परमात्म पालना, परमात्म पढ़ाई, परमात्म श्रीमत के आधार पर यह एक संग-मयुग का जन्म सदा अधिकारी नहीं तो २१ जन्म कैसे राज्य अधिकारी बनेंगे? हिसाब है ना! इस समय का स्वराज्य, स्व का राजा बनने से ही २१ जन्म की गैरन्टी है। मैं कौन और क्या बनूंगा, अपना भविष्य वर्तमान के अधिकार द्वारा स्वयं ही जान सकते हो। सोचो, आप विशेष आत्माओं की अनादि आदि पर्सनैलिटी और रॉयल्टी कितनी ऊंची है! अनादि रूप में भी देखो जब आप आत्मायें

परमधाम में रहती तो कितनी चमकती हुई आत्मायें दिखाई देती हो। उस चमक की रॉयल्टी, पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है। दिखाई देती है? और बाप के साथ-साथ आत्मा रूप में भी रहते हो, समीप रहते हो। जैसे आकाश में कोई-कोई सितारे बहुत ज्यादा चमकने वाले होते हैं ना! ऐसे आप आत्मायें भी विशेष बाप के साथ और विशेष चमकते हुए सितारे होते हो।

परमधाम में भी आप बाप के समीप हो और फिर आदि सतयुग में भी आप देव आत्माओं की पर्सनैलिटी, रॉयल्टी कितनी ऊंची है। सारे कल्प में चक्कर लगाओ, धर्म आत्मा हो गये, महात्मा हो गये, धर्म पितायें हो गये, नेतायें हो गये, अभिनेतायें हो गये, ऐसी पर्सनैलिटी कोई की है, जो आप देव आत्माओं की सतयुग में है?

अपना देव स्वरूप सामने आ रहा है ना? आ रहा है या पता नहीं हम बनेंगे या नहीं? पक्का है ना! अपना देव रूप सामने लाओ और देखो, पर्सनैलिटी सामने आ गई? कितनी रॉयल्टी है, प्रकृति भी पर्सनैलिटी वाली हो जाती है। पंछी, वृक्ष, फल, फूल सब पर्सनैलिटी वाले, रॉयल।

अच्छा फिर आओ नीचे, तो अपना पूज्य रूप देखा है? आपकी पूजा होती है! डबल फारेनर्स पूज्य बनेंगे कि इन्डिया वाले बनेंगे? आप लोग देवियां, देवतायें बने हो? सूंढ वाला नहीं, पूंछ वाला नहीं। देवियां भी वह काली रूप नहीं, लेकिन देवताओं के मन्दिर में देखो, आपके पूज्य स्वरूप की कितनी रॉयल्टी है, कितनी पर्सनैलिटी है? मूर्ति होगी, ४ फुट, ५ फुट की और मन्दिर कितना बड़ा बनाते हैं। यह रॉयल्टी और पर्सनैलिटी है।

आजकल के चाहे प्राइम मिनि-स्टर हो, चाहे राजा हो लेकिन धूप में बिचारे का बुत बनाके रख देंगे, क्या भी होता रहे। और आपके पूज्य स्वरूप की पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है। है ना बढ़िया! कुमारियां बैठी हैं ना! रॉयल्टी है ना आपकी?

फिर अन्त में संगमयुग में भी आप सबकी रॉयल्टी कितनी ऊंची है। ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है! डायरेक्ट भगवान ने आपके ब्राह्मण जीवन में पर्सनैलिटी और रॉयल्टी भरी है। ब्राह्मण जीवन का चित्रकार कौन? स्वयं बाप।

ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी रॉयल्टी कौन सी है ? प्युरिटी । प्युरिटी ही रॉयल्टी है । है ना ! ब्राह्मण आत्मायें सभी जो भी बैठे हो तो प्युरिटी की रॉयल्टी है ना ! हाँ, कांध हिलाओ । पीछे वाले हाथ उठा रहे हैं । आप पीछे नहीं हो, सामने हो । देखो नज़र पीछे जाती है, आगे तो ऐसे देखना पड़ता है पीछे आटोमेटिक जाती है । तो चेक करो - प्युरिटी की पर्सनैलिटी सदा रहती है ? मन्सा-वाचा-कर्मणा, वृत्ति, दृष्टि और कृति सबमें प्युरिटी है ?

मन्सा प्युरिटी अर्थात् सदा और सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना - सर्व प्रति । वह आत्मा कैसी भी हो लेकिन प्युरिटी की रॉयल्टी की मन्सा है - सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, कल्याण की भावना, रहम की भावना, दातापन की भावना । और दृष्टि में या तो सदा हर एक के प्रति आत्मिक स्वरूप देखने में आये वा फरिश्ता रूप दिखाई दे । चाहे वह फरिश्ता नहीं बना है, लेकिन मेरी दृष्टि में फरिश्ता रूप और आत्मिक रूप ही हो और कृति अर्थात् सम्पर्क सम्बन्ध में, कर्म में आना, उसमें सदा ही सर्व प्रति स्नेह देना, सुख देना । चाहे दूसरा स्नेह दे, नहीं दे लेकिन मेरा कर्तव्य है स्नेह देकर स्नेही बनाना । सुख देना । स्लोगन है ना - ना दुःख दो, ना दुःख लो ।

देना भी नहीं है, लेना भी नहीं है। देने वाले आपको कभी दुःख भी दे दें लेकिन आप उसको सुख की स्मृति से देखो। गिरे हुए को गिराया नहीं जाता है, गिरे हुए को सदा ऊंचा उठाया जाता है। वह परवश होके दुःख दे रहा है। गिर गया ना! तो उसको गिराना नहीं है और भी उस बिचारे को एक लात लगा लो, ऐसे नहीं। उसको स्नेह से ऊंचा उठाओ। उसमें भी फर्स्ट चैरिटी बिगन्स एट होम। पहले तो चैरिटी बिगन्स होम है ना, अपने सर्व साथी, सेवा के साथी, ब्राह्मण परिवार के साथी हर एक को ऊंचा उठाओ। वह अपनी बुराई दिखावे भी लेकिन आप उनकी विशेषता देखो। नम्बरवार तो हैं ना! देखो, माला आपका यादगार है। तो सब एक नम्बर तो नहीं है ना! १०८ नम्बर हैं ना! तो नम्बरवार हैं और रहेंगे लेकिन मेरा फर्ज क्या है? यह नहीं सोचना अच्छा मैं ८ में तो हूँ ही नहीं, १०८ में शायद आ जाऊंगी, आ जाऊंगा। तो १०८ में लास्ट भी हो सकता है तो मेरे भी तो कुछ संस्कार होंगे ना, लेकिन नहीं। दूसरे को सुख देते-देते, स्नेह देते-देते आपके संस्कार भी स्नेही, सुखी बन ही जाने हैं। यह सेवा है और यह सेवा फर्स्ट चैरिटी बिगन्स एट होम।

सन्तुष्टता तृप्ति की निशानी है। अगर तृप्त आत्मा नहीं होंगे, चाहे शरीर की भूख, चाहे मन की भूख होगी तो जितना भी मिलेगा, मिलेगा भी ज्यादा लेकिन तृप्त आत्मा न होने कारण सदा ही अतृप्त रहेंगे। असन्तुष्टता रहती है। जो रॉयल होते हैं, वह थोड़े में तृप्त होते हैं। रॉयल आत्माओं की निशानी - सदा ही भरपूर होंगे, एक रोटी में भी तृप्त तो ३६ प्रकार के भोजन में भी तृप्त होंगे। और जो अतृप्त होंगे, वह ३६ प्रकार के भोजन मिलते भी तृप्त नहीं होंगे क्योंकि मन की भूख है। सच्चे आशिक की निशानी - सदा तृप्त आत्मा होंगे। तो तीनों ही निशानीयां चेक करो। सदैव यह सोचो - 'हम किसके आशिक हैं! जो सदा सम्पन्न है, ऐसे माशूक के आशिक हैं!' तो सन्तुष्टता कभी नहीं छोड़ो। सेवा छोड़ दो लेकिन सन्तुष्टता नहीं छोड़ो। जो सेवा असन्तुष्ट बनावे वो सेवा, सेवा नहीं। सेवा का अर्थ ही है सेवा देने वाली सेवा। तो सच्चे आशिक सर्व हृद की चाहना से परे, सदा ही सम्पन्न और समान होंगे।

४

चारों ओर गरीबी बढ़ती जाती है और आपके यहाँ साहूकारी बढ़ती जाती है क्योंकि ज्ञान का धन आने से यह स्थूल भी स्वतः ही दाल-

रोटी मिलने जितना आ ही जाता है। कोई ब्राह्मण भूखा रहता है? तो स्थूल धन की गरीबी भी समाप्त हो जाती है क्योंकि समझदार बन जाते हैं। काम करके स्वयं को खिलाने के लिए वा परिवार को खिलाने के लिए भी समझ आ जाती है। इसलिए डबल साहूकारी आ जाती है। शरीर को भी अच्छा और मन को भी अच्छा। दाल-रोटी आराम से मिल रही है ना। ब्रह्माकुमार/ब्रह्माकुमारी बनने से रॉयल भी हो गये, साहूकार भी हो गये और अनेक जन्म मालामाल रहेंगे। जैसे पहले चलते थे, रहते थे, पहनते थे... उससे अभी कितने रॉयल हो गये हो! अभी सदा ही स्वच्छ रहते हो। पहले कपड़े भी मैले पहनेंगे, अभी अन्दर बाहर दोनों से स्वच्छ हो गये। तो ब्रह्माकुमार बनने में फायदा हो गया ना। सब बदल जाता है, परिवर्तन हो जाता है। पहले की शकल, अकल देखो और अभी भी देखो तो फर्क का पता चलेगा। अभी रूहानियत की झलक आ गई है, इसलिए सूरत ही बदल गई है। तो सदा ऐसे खुशी में नाचते रहो।

५

ब्राह्मणों के वर्तमान फीचर्स से फ्यूचर को देखते हैं। हरेक बच्चा स्वर्ग का अधिकारी है। बच्चों के अधिकार को देख बाप-दादा को

भी ईश्वरीय फ़ख़ुर है कि सारे विश्व में ऐसे तकदीरवान बच्चे किसी के हो नहीं सकते। ऐसा फ़ख़ुर बच्चों को भी रहता है कि हमारे जैसी तकदीर किसी की हो नहीं सकती। बाप-दादा आज विशेष रूप से हर बच्चे में एक विशेषता देख रहे हैं कि हर एक में रीयल्टी की रायल्टी कहाँ तक आई है! रीयल्टी ही रायल्टी है। इससे बड़ी रायल्टी और कोई नहीं है। रायल्टी किन बातों की वा रीयल्टी किस बात की ?

पहले अपने स्वरूप की रीयल्टी। अगर रीयल्टी अर्थात् अपने असली स्वरूप की सदा स्मृति है तो स्वरूप की रीयल्टी से इस स्थूल सूरत में भी अलौकिक रायल्टी नज़र आयेगी। जो भी देखेंगे उनके मुख से यही निकलेगा कि यह इस दुनिया के नहीं हैं लेकिन अलौकिक दुनिया के फरिश्ते हैं अथवा यह स्वर्ग का कोई देवता उतरा है। ऐसे रायल्टी से अनुभव होगा। दूसरी बात स्मृति में भी रीयल्टी अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई।

इस रीयल्टी की स्मृति से कर्म में वा बोल में रायल्टी दिखाई देगी। हर कर्म सत्य अर्थात् श्रेष्ठ होने के कारण जो भी सम्पर्क में आयेंगे उन्हें हर कर्म में बाप समान चरित्र अनुभव होंगे। हर बोल में बाप के

समान अर्थात् और प्राप्ति की अनुभूति होगी अर्थात् हर बोल समर्थ अर्थात् फल देने वाला होगा। जिसको कहा जाता है सत-वचन। ऐसे कर्म और बोल में रीयल्टी की रायल्टी होगी।

सम्पर्क अर्थात् संग रीयल होने के कारण पारस का कार्य करेगा। जैसे पारस लोहे को परिवर्तन कर देता है - ऐसे रीयल्टी की रायल्टी वाली आत्मा का संग असमर्थ को समर्थ बना देगा अर्थात् नकली को असली बना देगा। ऐसी आत्मा के रीयल और रायल नयन अर्थात् दिव्य दृष्टि जादू की वस्तु समान काम करेंगे। अभी-अभी मुक्ति के स्टेज की अनुभूति, अभी-अभी जीवनमुक्ति के स्टेज की अनुभूति, अभी-अभी लास्ट अन्तिम जन्म, अभी-अभी फर्स्ट जन्म का स्पष्ट साक्षात्कार करायेंगे। अभी अति दुःखी स्टेज, अभी-अभी अति सुखमय जीवन का अनुभव करायेंगे। 'हम सो-सो हम' के जादू के मन्त्र का अनुभव करायेंगे अर्थात् ८४ जन्मों का ही ज्ञान स्मृति में दिलायेंगे। अभी-अभी स्थूल वतन, संगम युग के सुख की अनुभूति करायेंगे, अभी-अभी सुक्ष्म फरिश्ते स्वरूप का अनुभव करायेंगे। अभी-अभी परमधाम निवासी आत्मिक स्वरूप का अनुभव करायेंगे, अभी-अभी स्वर्ग के सुखमय जीवन का अनुभव

करायेंगे। एक सेकेण्ड में इन चारों ही धामों का अनुभव करायेंगे, यह है जादू मन्त्र।

ऐसे रायल्टी वाले सदा सर्व कर्म इन्द्रियों द्वारा कोई न कोई प्राप्ति कराने वाले अर्थात् देने वाले दाता होंगे। ऐसे रायल्टी वाले किसी भी प्रकार के मायावी आकर्षण तरफ संकल्प द्वारा भी झुकेंगे नहीं अर्थात् प्रभावित नहीं होंगे। जैसे आजकल की रायल्टी वाली आत्मायें सदा भरपूर रहने के कारण यहाँ वहाँ किसी के अधीन नहीं होगी। ऐसे सदा बुद्धि भरपूर रहने के कारण, स्थूल में कहते हैं पेट भरा हुआ है और यहाँ बुद्धि हर खज़ाने से भरपूर होगी, इसीलिए कोई भी व्यक्ति वा वैभव के तरफ जो अल्पज्ञ और अल्पकाल के हैं, वहाँ बुद्धि नहीं जायेगी अर्थात् अप्राप्त कोई वस्तु नहीं होगी -जो लेने के लिए कहाँ नज़र जाए। उनके नयनों में सदा बिन्दु रूप बाप ही समाया हुआ होगा। यह है रायल्टी अर्थात् रीयल्टी।

यह देह भी रीयल नहीं, देही रीयल है। तो अपने आप से पूछो रीयल्टी की रायल्टी कहाँ तक आई है। नम्बरवार होगी ना मेरा नम्बर कौन सा है -यह चैक करो। फर्स्ट डिवीज़न में हैं वा सेकेण्ड में हैं, थर्ड तो नहीं कहेंगे ना। अगर सेकेण्ड में भी हो तो आज फर्स्ट

में आ जाना। सेकेण्ड नम्बर वालों को भी संगमयुग में भी सर्व प्राप्ति की अनुभूति नहीं होगी। कोई प्राप्ति होगी कोई नहीं होगी - जैसे कई कहते हैं शान्ति की अनुभूति तो होती है लेकिन अतिइन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं है। खुशी की अनुभूति होती है लेकिन शक्ति रूप की अनुभूति नहीं होती। फर्स्ट डिवीज़न वाले को हर गुण की अनुभूति हर शक्ति की अनुभूति होगी। अगर कोई भी कमी है अर्थात् १४ कला है सेकेण्ड डिवीज़न। ऐसी आत्मायें अभी अभी श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित रह जाती और भविष्य में भी सतोप्रधान प्राप्ति के बजाय सतो प्राप्ति करती हैं। तो सेकेण्ड डिवीज़न हो गये ना। फर्स्ट डिवीज़न वाले राज्य के, प्रकृति के सतोप्रधानता का सुख लेंगे और वह सतो का सुख लेगे, सतोप्रधान का नहीं। तो अब सोचो कि क्या लेना है? सतोप्रधानता की प्राप्ति वा सतो की प्राप्ति। सर्व प्राप्ति की अनुभूति वा कोई-कोई प्राप्ति की अनुभूति, खुद ही अपना जज बनो- तो धर्मराज के पास जाना नहीं पड़ेगा। समझा - रीयल्टी ही रायल्टी कैसे है।